स्वतंत्रता प्राप्ति में हमारे देश की महिलाओं की अहम भूमिका :—

राष्ट्रीयकरण करके देश की अर्थव्यवस्था को सुधारा। 1971 में पाकिस्तान को करारी शिकस्त देने के बाद उन्हें दुर्गा कहा जाने लगा।

सरोजनी नायडू : 77 वां योगदान भारत की स्वर कोकिला और स्वतंत्रता सेनानी एवं कवयित्री सरोजनी नायडू, कॉंग्रेस की अध्यक्ष और किसी प्रदेश कि राज्यपाल बनने वाली पहली महिला थी। 1917 में उन्होंने ने भारतीय महिला एसोसिएशन के गठन में महत्वपूर्ण भूमिका निभायी।

अमृत प्रीतम : 100 योगदान, इन्हीं का आता है। इन्होंने पंजाबी और हिन्दी भाषा की लेखिका कवयित्री अमृत प्रीतम, अपने समय कि महिलाओं से कहीं आगे मानी जाती थी।

कुछ अन्य प्रमुख कुछ इस प्रकार हैं।

→ मार्गरेट थैचर : ब्रिटेन की पहली महिला प्रधानमंत्री
→ एंजेला बर्डेट-काउट्स : इंग्लैंड की सबसे अमीर महिलाओं में शुमार
→ फ्लोरेंस नाइटिंगेल : ब्रिटिश नर्स और समाजिक कार्यकर्ता
→ डायना : वेल्स की राजकुमारी
→ महारानी विक्टोरिया : ब्रिटेन की महारानी
→ श्रीमाओ भण्डारनायके : श्रीलंका की प्रधानमन्त्री।

और भी इत्यादि नाम बहुत से हैं, जिनके उपस्थिती का प्रभाव बहुत जटील अथवा अविश्वसनीय है। इसे अतुलनीय भी कहा कोई गलत नहीं साबित होगा।

महिलाओं की भूमिका का प्रभाव हमारे देश को स्वतंत्र करवाने में भी अहम है।

आज हम 21 वीं सदी के कई कीर्तिमान स्थापित किये हैं, और लगातार कर भी रहें हैं। लेकिन आज के भी समय ऐसी खबरें सुनने को मिलती हैं, जिनमें महिलाओं और बच्चीयों का समाज में उचित स्थान देने से इन्कार कर दिया जाता है।

महिलाएं अपना भविष्य तलाशने और शिक्षा हासिल करने जैसे कई सवालों में अभी भी कई बार दबी हुई नजर आती है। उन्हें अपने सपने को साकार करने के लिए समाज व परिवार की परम्पराओं को लाँघना पड़ता है।